

# **Tum Bin Laaj Gareeb Ki Kaun Rakhe Ghanshyam Lyrics Hindi English**

## **Tum Bin Laaj Gareeb Ki Kaun Rakhe Ghanshyam Lyrics in Hindi and English**

### **Tum Bin Laaj Gareeb Ki Kaun Rakhe Ghanshyam Lyrics in Hindi**

तुम बिन लाज गरीब की कौन रखे घनश्याम ।निर्बल के बल तुम हो मुरारी सबके सवारो काज रे।

जब की ग्राह ने गज को पकड़ा अंतिम क्षण मे प्राण हो।  
तब गज ने किया ध्यान प्रभु का लेते ही आये नाम हो।  
तुम बिन लाज गरीब की।

दुष्ट दुशाशन चिर जो खींचे नहीं आवे कोई काम रे।  
कर उठाये द्रोपदी ने पुकारी, सारी बने घंश्याम हो.  
तुम बिन लाज गरीब की।

विप्र सुदामा द्वार जो आये दौरे नंगे पाव हो।  
चरण धोये निज धाम दिए प्रभु, जाने सकल जहाँ रे।  
तुम बिन लाज गरीब की।

### **Tum Bin Laaj Gareeb Ki Kaun Rakhe Ghanshyam Lyrics in English**

Tum bin laaj gareeb ki kaun rakhe Ghanshyam.  
Nirbal ke bal tum ho Murari, sabke sawaaro kaaj re.

Jab ki Graah ne gaj ko pakda, antim kshan mein praan ho.  
Tab gaj ne kiya dhyaan Prabhu ka, lete hi aaye naam ho.  
Tum bin laaj gareeb ki.

Dusht Dushashan chir jo kheenche, nahi aave koi kaam re.  
Kar uthaye Draupadi ne pukari, saari bane Ghanshyam ho.  
Tum bin laaj gareeb ki.

Vipra Sudama dwaar jo aaye, daure nange paav ho.  
Charan dhoye nij dhaam diye Prabhu, jaane sakal jahan re.  
Tum bin laaj gareeb ki.

### **About Tum Bin Laaj Gareeb Ki Kaun Rakhe Ghanshyam Bhajan in English**

“Tum Bin Laaj Gareeb Ki Kaun Rakhe Ghanshyam” is a devotional bhajan that calls out to **Lord**

**Krishna**, also referred to as **Ghanshyam**, highlighting his role as the protector and savior of the weak and helpless. The bhajan speaks to Krishna's divine qualities of mercy, protection, and his ability to come to the rescue of those in dire need. It portrays Krishna as the strength of the weak, the protector of honor, and the ultimate source of hope for his devotees.

- **The Protector of the Helpless:** The central theme of this bhajan is the acknowledgment of **Krishna's divine intervention** in the lives of those who are weak, helpless, and downtrodden. The line "Tum bin laaj gareeb ki kaun rakhe Ghanshyam" (Without you, who will protect the honor of the poor, O Ghanshyam?) expresses the devotee's belief that only Krishna can safeguard the dignity of the helpless and the needy. Krishna is invoked as the savior who protects the honor and dignity of those who have no one else to turn to.
- **The Power of Krishna's Blessings:** The bhajan recounts incidents where Krishna's divine presence and blessings saved people in moments of peril. For instance, the bhajan mentions the incident with **Gajendra**, the elephant, who was trapped and about to die, but upon remembering Krishna, was rescued. "Jab ki Graah ne Gaj ko pakda, antim kshan mein praan ho" (When the crocodile held the elephant, at the last moment, his life was saved) demonstrates Krishna's mercy, where even in the face of death, Krishna's name brings salvation.
- **Krishna's Role in Saving Draupadi:** Another key moment mentioned in the bhajan is when **Draupadi** was humiliated in the court, and she called upon Krishna for help. "Dusht Dushashan chiro jo kheenche, nahi aave koi kaam re" (When the wicked Dushashan tried to disrobe Draupadi, and no one could help, Krishna intervened). Krishna's timely intervention saved her honor, showing his role as the protector of justice and righteousness.
- **Krishna's Compassion for Sudama:** The bhajan also highlights the story of **Sudama**, a poor Brahmin who visited Krishna despite his poverty. "Vipra Sudama dwaar jo aaye, daure nange paav ho" (When Sudama, barefoot, came to Krishna's door). Krishna not only welcomed him but also blessed him with immense wealth and prosperity, proving that Krishna's mercy is for all, regardless of their status or wealth. Krishna cares for his devotees and rewards their devotion, just as he did for Sudama.
- **Krishna as the Savior of the Needy:** Overall, the bhajan emphasizes Krishna's role as the ultimate savior and protector. His grace transcends all material wealth and status, offering refuge to the poor, weak, and helpless. By recalling these various incidents from Krishna's life, the bhajan seeks to invoke Krishna's mercy and blessings for the devotee, acknowledging that without Krishna, no one can protect or save the honor of the vulnerable.

In essence, "**Tum Bin Laaj Gareeb Ki Kaun Rakhe Ghanshyam**" is a heartfelt call to **Krishna** to protect the weak and restore their dignity. It reflects the devotion and faith of a devotee who believes that only Krishna can provide ultimate protection and support in times of adversity, as He has done throughout his divine life. The bhajan is a testament to Krishna's mercy, justice, and care for His devotees, offering hope and faith in His divine intervention.

## About Tum Bin Laaj Gareeb Ki Kaun Rakhe Ghanshyam Bhajan in Hindi

“तुम बिन लाज गरीब की कौन रखे घनश्याम” भजन के बारे में

“तुम बिन लाज गरीब की कौन रखे घनश्याम” एक अत्यंत भक्ति से भरा हुआ भजन है, जो भगवान श्री कृष्ण के प्रति भक्त की गहरी श्रद्धा, विश्वास और आशा को व्यक्त करता है। इस भजन में भगवान श्री कृष्ण को घनश्याम के रूप में पुकारा जाता है,

जो गरीबों, कमजोरों और उनके भक्तों की रक्षा करते हैं। यह भजन उन भक्तों की आस्था को दर्शाता है जो भगवान कृष्ण के सामने अपनी लाज, दुख और विपत्तियों का निवारण पाने के लिए आह्वान करते हैं।

- **कृष्ण की दया और रक्षा :** भजन का मुख्य विषय भगवान श्री कृष्ण की रक्षा, कृपा और उनके भक्तों के प्रति असीम प्रेम को दर्शाता है। “तुम बिन लाज गरीब की कौन रखे घनश्याम” पंक्ति में भक्त भगवान श्री कृष्ण से निवेदन करता है कि उनके बिना गरीबों और कमजोरों की लाज कौन बचाएगा ? इसका मतलब है कि केवल भगवान श्री कृष्ण ही अपने भक्तों की रक्षा करने की शक्ति रखते हैं और उनकी लाज की रक्षा कर सकते हैं।
- **प्रह्लाद की कहानी :** भजन में प्रह्लाद के बारे में भी उल्लेख किया गया है, जब उनके पिता ने उन्हें परेशान किया, लेकिन भगवान कृष्ण ने उनकी रक्षा की। “पिता ने प्रह्लाद नु पहाड़ों सुटेया, सुता होया प्यार ऐथे जाग उटेया” (जब उनके पिता ने प्रह्लाद को संकट में डाला, तब भगवान कृष्ण की कृपा ने उन्हें बचाया) यह पंक्ति भगवान कृष्ण के प्रति भक्तों की निष्ठा और विश्वास को प्रकट करती है, कि कृष्ण हमेशा अपने भक्तों को संकट से उबारते हैं।
- **द्रौपदी का सम्मान :** भजन में द्रौपदी की स्थिति का भी उल्लेख है, जब दुषाशन ने उसे अपमानित करने की कोशिश की। “द्रौपदी ने सभा विच बाजां मारियां, द्वारका च बैठे सुन लईयां सारियां” पंक्ति में भगवान श्री कृष्ण की उस वक्त की दिव्य सहायता का वर्णन किया गया है, जब उन्होंने द्रौपदी की लाज बचाई और उसे सम्मान दिया।
- **सुदामा की भक्ति :** भजन में सुदामा की कहानी का भी जिक्र है, जब वह भगवान कृष्ण के पास अपनी दरिद्रता के बावजूद गए। “विप्र सुदामा द्वार जो आये, दौरे नंगे पाव हो” (सुदामा भगवान श्री कृष्ण के पास नंगे पांव पहुंचे) यह पंक्ति भगवान कृष्ण की भक्ति के प्रति अनन्य श्रद्धा और उनकी कृपा की महिमा को दर्शाती है, जिसमें भगवान ने अपने भक्त को अमूल्य आशीर्वाद दिया और उसकी दरिद्रता को समाप्त किया।
- **कृष्ण का सारथी रूप :** भजन में कृष्ण के सारथी रूप का भी जिक्र किया गया है, जब उन्होंने अर्जुन को युद्ध के मैदान में मार्गदर्शन दिया। “रथ नु चलान वाला रथवान सी, सानु भी तां चाहिए ऐसा भगवान सी” पंक्ति में यह बताया गया है कि भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को न केवल युद्ध में बल्कि जीवन के प्रत्येक पहलु में सही मार्गदर्शन दिया, जो उनके भक्तों के लिए एक आदर्श है।

कुल मिलाकर, “तुम बिन लाज गरीब की कौन रखे घनश्याम” भजन भगवान श्री कृष्ण के प्रति भक्त की विश्वास और प्रेम को प्रकट करता है। यह भजन यह बताता है कि भगवान कृष्ण ही अपने भक्तों की रक्षा करने वाले हैं, और उनके बिना कोई भी नहीं है जो गरीबों और दुखियों की मदद कर सके। यह भजन कृष्ण के प्रति अनन्य श्रद्धा, विश्वास और उनकी कृपा के लिए आह्वान करता है।